औचित्य

औचित्य — औचित्य सम्प्रदाय में काव्य की आत्मा का पद "औचित्य" को प्राप्त है। जिस प्रकार मानव जीवन में औचित्य का महत्व है, उसी प्रकार काव्य के जीवन में भी औचित्य महत्वपूर्ण तत्व है। औचित्य की सीमा अतिविस्तृत है। क्योंकि प्रत्येक तत्व का जो जिसके अनुरूप है, उसी स्थान पर प्रयोग उचित कहलाता है, और उचित का भाव ही औचित्य कहा जाता है।

जहाँ पर औचित्य के अनुसार काव्य में कमि कार्य नहीं करता, वहाँ काव्य उपहासास्पद हो जाता है। काव्य में रस, अलंकार, गुण, रीति आदि के द्वारा काव्यात्वाद और चमत्कार वहीं मिलता है जहाँ इनका प्रयोग औचित्यपूर्ण होता है।

मुनिचन्द्र ने औचित्य के महत्व का आकलन करते हुए लिखा है कि "यदि काव्य में एक ओर औचित्य है तो गुणसमुदाय वहाँ विद्यमान है। यदि औचित्य नहीं है तो दूसरी ओर गुणसमुदाय भी सर्वथा व्यर्थ है"

औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक "आचार्य क्षेमेन्द्र" ने भी लिखा है कि "काव्य में अलंकार और गुण आदि सभी व्यर्थ हैं, यदि उसमें काव्य के जीवित औचित्य का निर्वाह नहीं हुआ है।"

अतः औचित्य काव्य का एक अनिवार्य तत्व है। यह काव्य के प्रत्येक अंग में रहना चाहिए। क्योंकि जहाँ पर उसका अभाव होता है, वहीं पर रसभंग का कारण बनता है। "आनन्दवर्धन" ने भी लिखा है कि "अनौचित्य के अतिरिक्त रसभंग का और दूसरा कोई कारण नहीं है, तथा औचित्य से बढ़कर रस का परम रहस्य नहीं है।"

Scanned with CamScanner